संस्मरण

डेविड ऑसबरॉ

❑ रोहित धनकर

नीलबाग गांव ही स्कूल था और स्कूल ही गांव, क्योंकि नीलबाग उस स्कूल का नाम था जो इस बस्ती के अस्तित्व को औचित्य प्रदान करता था । स्कूल जो एक प्राचीन आश्रम जैसा लगता था लेकिन आश्रम से भिन्न था । इस पहचान के पीछे डेविड ऑसबरॉ का अथक श्रम था जिन्हें नीलबाग में लोग 'अप्पा' कहते थे। डेविड पर रोहित धनकर की यह संस्मरणात्मक टिप्पणी नवम्बर, 1984 में 'शिविरा' में छपी थी, जो कि शिक्षा के क्षेत्र में डेविड के काम व विचारों की एक मामूली झलक मात्र है।

कर्नाटक राज्य में एक गांव है-रायलपाड । रायलपाड से लगभग 2 किलोमीटर दूर चारों तरफ बाड़ से घिरा लाल टायल वाले मकानों का एक समूह है इसे नीलबाग कहते हैं । नीलबाग को गांव भी कहा जा सकता है । पर इसे स्कूल कहना अधिक सही होगा। क्योंकि नीलबाग उस स्कूल का नाम है जो इस बस्ती के अस्तित्व को औचित्य या नाम प्रदान करता है । नीलबाग हमारे सैकड़ों हजारों स्कूलों से बहुत भिन्न है । विचारधारा में भी तथा अध्यापन विधियों में भी । यहां बच्चों व अध्यापकों का आपसी संबंध खुला व सहयोगियों जैसा है । यहां का वातारण हमारे प्राचीन आश्रमों की झलक देता है पर साथ ही आश्रमों से भिन्न भी है ।

यह, और इस जैसे चार और स्कूल एक व्यक्ति के परिश्रम का परिणाम हैं । इस व्यक्ति को नीलबाग में सब 'अप्पा' कहते हैं, नाम है डेविड ऑसबरॉ । पर दुर्भाग्य, कि 8 अगस्त 84 को उनका देहांत हो गया।

डेविड अब नहीं रहे । नीलबाग के लिए और उन चारों स्कूलों के लिए, जिन्हें डेविड ने आरंभ किया था, उनका देहान्त एक हृदयविदारक घटना है । पर उनके देहान्त का दु:ख इन्हीं लोगों तक सीमित नहीं है, वह हर व्यक्ति जो डेविड से कभी भी मिला है उनका मुरीद बन गया है ।

डेविड के व्यक्तित्व के गुणों पर एक पूरा ग्रंथ लिखा जा सकता है । पर यहां उनके शिक्षा संबंधी कार्यों एवं विचारों पर लिखना अधिक संगत होगा । हालांकि एक छोटे लेख में उनके शिक्षादर्शन के साथ न्याय कर पाना संभव नहीं है फिर भी बहुत संक्षेप में मैं कुछ लिखना चाहूंगा ।

वे जीवन में स्वतन्त्रता के कायल थे । अत: शिक्षा संस्थाओं में भी स्वतंत्रता के समर्थक थे । यह स्वतंत्रता विचार व व्यवहार के स्तरों पर समान रूप से चलती थी । यही कारण है कि डेविड के सभी स्कूलों में बच्चों को बहुत स्वतंत्रता मिलती है । यहां तक कि कक्षा में आने न आने की स्वतंत्रता भी उन्हें मिलती है । स्वतंत्रता अर्थात अपने व्यवहार में स्वयं सुविचारित निर्णय लेना । यह इसलिए कि किसी अधिकारिक सत्ता के भय से सद्व्यवहार को वे यथेष्ट नहीं समझते थे । उनका मानना था कि सत्ता के भय से किया गया सद्व्यवहार सत्ता के भय के अभाव में दुर्व्यवहार में बहुत आसानी से बदलता है। सुशिक्षित व्यक्ति को सद्व्यवहार के महत्व व मूल्य को समझ कर अपनाना चाहिए; भय के कारण नहीं । अत: इस गुण के विकास के लिए बच्चों को स्वतंत्रता मिलना आवश्यक है ।

स्वतंत्रता के उपयोग की एक आवश्यक शर्त है सुविचारित निर्णय लेने की क्षमता का होना । बिना इस योग्यता के न तो स्वतंत्रता कायम रह सकती है और न ही वह उच्छृंखलता बनने से बच सकती है । अत: डेविड शिक्षा में स्वतंत्र व समालोचनात्मक विचार शक्ति को अत्यधिक महत्वपूर्ण मानते थे ।

जब शाला में बालकों को स्वतंत्रता देते हैं तो प्रश्न यह उठता है कि क्या वे अध्ययन के लिए कक्षाओं में आयेंगे ? इसके लिए डेविड कुछ वस्तुओं को महत्वपूर्ण मानते थे । (क) छात्र-शिक्षक संबंध का आत्मीय व विश्वासपूर्ण होना । (ख) शाला के समस्त कार्यकलापों को रुचिकर बनाना । (ग) बच्चों को मानसिक योग्यतानुसार काम देना (घ) उनकी स्वाभाविक जिज्ञासा को विकसित करने के लिए नये-नये बौद्धिक अनुभव प्रदान करने वाले क्रियाकलाप। सैद्धांतिक दृष्टि से डेविड के लिए बच्चों को अभिप्रेरित करने के उपरोक्त साधनों पर निर्भरता एक तार्किक आवश्यकता थी। कारण यह है कि स्वतंत्रता को बरकरार रखते हुए, बिना दण्ड व पुरस्कार का उपयोग किये, प्रतियोगिता की भावना व परीक्षा अंक आदि के अभाव में अभिप्रेरण के नवीन तरीके खोजना अनिवार्य हो जाता है ।

शिक्षा की प्रक्रिया को आनन्ददायी बनाने के लिए डेविड व्यावहारिक क्रिया-कलापों को बहुत महत्त्वपूर्ण मानते थे ।

क्रियाकलाप, कि जिनके माध्यम से बच्चे अनुभव करके व आनंद प्राप्त करते हुए सीख सकें । इसी कारण डेविड के सभी स्कूलों में हस्तकलाओं को बहुत महत्व दिया जाता है । पर हस्तकलाओं के सिखाने में उनके शैक्षणिक महत्त्व को ध्यान में रखा जाता है । भावी जीवन में कर्मकार बनाना इसका उद्देश्य नहीं माना जाता । डेविड का कहना था कि हम दास कर्मकार में नहीं, सुविचारपूर्ण सुशिक्षित व्यक्तियों के विकास में रुचि रखते हैं । आगे वे क्या काम चुनते हैं यह निर्णय वे स्वयं करेंगे । हमारा काम उनमें यह निर्णय ले सकने की योग्यता का विकास करना है ।

विज्ञान की शिक्षा में प्रयोगों का महत्व सभी स्वीकारते हैं । डेविड ने विज्ञान व पर्यावरण शिक्षा की अपनी लिखी पुस्तकों के हर पृष्ठ पर बच्चों के लिए सरल व रुचि कर प्रयोग दिये हैं।

स्वयं सीख व समझ सकने की योग्यता को डेविड शिक्षा का आवश्यक अंग समझते थे । उनका कहना था कि बच्चों को अपने आप अध्ययन करना आना चाहिए । परिस्थिति से, प्रयोगों के द्वारा, पुस्तकों से अपने आप सीख सकने की योग्यता का विकास आवश्यक है तभी उनकी शिक्षा पूर्ण होगी । अध्ययन व सीखने के लिए अध्यापन पर निर्भरता को वे शिक्षा के अधूरेपन की निशानी मानते थे । अत: अध्यापक का काम सीखने का वातावरण बनाना तथा आवश्यक सहायता करना है। पूर्वपाचित भोजन कभी पाचन संस्थान को समर्थ नहीं बनने देता ।

डेविड बच्चों के शिक्षण में उनकी रुचियों व बौद्धिक योग्यताओं का ध्यान रखने के हिमायती थे । बच्चों की सीखने की गति समान नहीं होती । वे मानते थे कि बच्चे को अपनी गति से सीखने की छूट होनी चाहिए । तभी उनकी अध्ययन में रुचि बनी रह सकती है। इसी कारण डेविड के स्कूलों में कोई निश्चित कक्षाएं नहीं होती। कक्षा को डेविड काल्पनिक मानते थे। सभी बच्चे एक साथ बैठ कर अपने-अपने स्तर की पढ़ाई अध्यापक की सहायता से, पर अधिकतर स्वयंमेव करते हैं । यह तो स्पष्ट ही है कि उपरोक्त मान्यताओं के प्रकाश में शिक्षा की प्रक्रिया में परीक्षा एक अनावश्यक व्यवधान मात्र रह जाता है । डेविड परीक्षाओं के विरोधी थे । उनके विचार से सारा का सारा मूल्यांकन तन्त्र 'घनचक्कर की पहेली योजना' से अधिक कुछ नहीं था ।

बौद्धिक योग्यताओं के साथ-साथ डेविड नैतिक व सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्यों को भी अत्यधिक महत्व का समझते थे । उनके विचार से तथ्यों को कंठगत करने से कहीं अधिक महत्व नैतिक सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्यों का विकास करना था । अत: कला व विचार-शक्ति के विकास पर वे बहुत बल देते थे । संगीत, ललितकलाओं व हस्तकलाओं का महत्व उनके स्कूलों में पुस्तकीय विषयों से किसी भी तरह कम नहीं है।

बौद्धिक योग्यताओं के साथ-साथ डेविड नैतिक व सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्यों को भी अत्यधिक महत्व का समझते थे । उनके विचार से तथ्यों को कंठगत करने से कहीं अधिक महत्व नैतिक सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्यों का विकास करना था । अत: कला व विचार-शक्ति के विकास पर वे बहुत बल देते थे । संगीत, ललितकलाओं व हस्तकलाओं का महत्व उनके स्कूलों में पुस्तकीय विषयों से किसी भी तरह कम नहीं है ।

डेविड शिक्षा में प्रतियोगिता की भावना को शिक्षा व व्यक्तिगत विकास दोनों के लिए घातक समझते थे। उनके विद्यालयों में जोर प्रतियोगिता पर नहीं, सहयोग पर दिया जाता है । इसी कारण वहां बच्चों की आपस में तुलना कभी नहीं की जाती । हर बच्चे को अपना काम सर्वोत्तम रीति से करने के लिए उत्साहित किया जाता है, किसी दूसरे बच्चे से अच्छा करने के लिए नहीं ।

उपरोक्त मान्यताएं लगभग सभी शिक्षा-शास्त्रियों की होती हैं। हम सभी जब शिक्षा पर विचार-विमर्श करते हैं तो इन्हें सैद्धांतिक स्तर पर स्वीकारते हैं। पर इन मान्यताओं के आधार पर विद्यालय चलाना पड़े तो व्यावहारिकता के नाम पर इनमें आमूल परिवर्तन कर देते हैं । डेविड ने इन मान्यताओं को, बिना तथाकथित व्यावहारिक समझौते किए, कार्यरूप में परिणित किया है । यह उनकी बहुत बड़ी सफलता है ।

ऊपर सभी जगह मैंने डेविड की शिक्षा संस्थाओं के लिए स्कूल या विद्यालय शब्द का प्रयोग किया है । यह विद्यालय के विस्तृत अर्थों में है । अध्ययन के स्तर का इससे संबंध नहीं है । यह मुझे इस कारण लिखना पड़ रहा है कि हमारे यहां स्कूल माने अधिक से अधिक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय । डेविड के विद्यालय में इससे आगे तक का अध्ययन कराया जाता है ।

यह शिक्षा के क्षेत्र में डेविड के काम व विचारों की एक अधूरी झलक मात्र है । विस्तृत विवेचना करना यहां ध्येय भी नहीं था । डेविड शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रकाश स्तंभ थे । वे अब नहीं रहे । पर उनके कार्य और विचार मौजूद हैं और रहेंगे । उनके विचार शिक्षा के क्षेत्र में हमारा मार्ग-दर्शन बहुत आगे तक कर सकते हैं । ◆